

अंतस् की भावना

गुरुवर की कृपा जग में सबसे निराली।
होली यही, दशहरा यही है दिवाली॥

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हमेशा एक से बढ़कर एक तपोनिष्ठ साधु-संत, ऋषि-महर्षि एवं महापुरुष हुए हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक एवं आचरणात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्र धारा निरन्तर प्रवाहित की है। जिनमें अवगाहन कर अनेकों जीवों ने अपने को सफल बनाया है। ऐसे ही संत-मुनियों में अद्वितीय है परम पूज्य आचार्य श्री की पावन वाणी सत्यं-शिवं-सुन्दरं की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्तिद्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है। गुरुवर की लेखनी में तो ऐसी जादूगरी है जो सभी को मंत्रमुग्ध कर देती है। जो इस संसार में पतित के लिए पावन बनाने में सहाई होती है। जो जीव भगवान की भक्ति, पूजा, अर्चना, विधान, गुणगान मन-वचन-काय तीनों की सरलता से वीतरागी भगवान की शरण को प्राप्त कर उन्हीं के बताये हुये मार्ग पर चलता है। वह सम्यक्दृष्टि जीव ही एक दिन पावनता, पूज्यता, वीतरागता को प्राप्त होता है।

पूज्य आचार्य श्री ने हमें वासुपूज्य भगवान कि भक्ति करने का सुनहरा अवसर 'इस विधान' के माध्यम से प्रदान किया है आचार्य श्री ने इस विराट भावना को हृदय में संजोये हुए 'सुखी रहें सब जीव जगत में, कोई कभी न घबराये' क्योंकि मनुष्य का सांसारिक जीवन कष्टमय होता है। अतः इस विधान को भक्ति भाव से करके अपने कर्मों की निर्जरा कर सुखमय जीवन बना सकता है। कहा भी है-

जिन पूजातैं सब सुख होय, जिन-पूजा सम अवर न कोय।

जिन-पूजातैं स्वर्ग-विमान, अनुक्रम तैं पावै निर्वाण॥

आचार्य श्री का भक्तों पर महान् उपकार है तथा अपने अभीक्षण ज्ञान से साहित्य को भी उपकृत किया है। संतों का जीवन आश्चर्यों का महालेख ही नहीं होता, अपितु उनमें चेतना का उन्मेष भी होता है। उनके हर चरण आचरण में मनुष्य नये उच्छ्वास, नई प्रेरणा, शक्ति का अनुभव करता है। जिससे समाज और साहित्य को नई दिशा प्राप्त होती है।

समस्त लोककल्याण की भावना से युक्त कविहृदय, क्षमामूर्ति, वात्सल्यरत्नाकर, परमज्ञानी, महायोगी जो देश की माटी की गरिमा बढ़ा रहे हैं ऐसे अभिवंदनीय, विश्व-वन्दनीय गुरुवर के श्री चरणों कोटिशः नमोस्तु-3

आचार्य श्री के चरणों में अंतिम मनोभावना-

तेरी छत्रछाया गुरुवर मेरे सिर पर हो।

मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥

-ब्र. आरती दीदी (संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

स्तवन

दोहा- वासुपूज्य भगवान शुभ, जग में हुए महान।
मुक्ति पथ का आपने, दिया विशद सोपान॥

(ज्ञानोदय छंद)

वासुपूज्य के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।
केवलज्ञान जगाने वाले, सकल जगत के जाननहार॥
महिमा हम गाते जिनवर की, सर्व कर्म क्षय करने को।
वसो हृदय में मेरे प्रभु जी, दुर्निवार के हरने को॥1॥
प्रथम वालयति तीर्थकर प्रभु, वासुपूज्य कहलाए महान।
चौवन सागर जिन श्रेयांस के, बाद हुए हैं विश्व प्रधान॥
लाल रंग तन का शुभ पाए, भैंसा जिनकी है पहिचान।
वंश इक्ष्वाकु कश्यप गोत्री, ॐचे सत्तर धानुष प्रमाण॥2॥
फाल्गुन वदी चतुर्दशि को प्रभु, जन्मे वासुपूज्य भगवान।
लाख बहत्तर वर्ष की आयु, जन्मत ही धारे त्रय ज्ञान॥
वाद्य बजे आनन्दमयी शुभ, जिसकी महिमा अपरम्पार।
ऐरावत ले इन्द्र ने आके, खुश होके बोला जयकार॥3॥
पाण्डु शिला पर न्हवन कराए, होकर के जो भाव विभोर।
इन्द्र बाल ऐरावत पर ले, जाता पाण्डुक बन की ओर॥
सचि से बालक इन्द्र राज ने, लेकर दर्शन किया महान।
पाण्डुक वन में पाण्डु शिला पर, बैठाकर कीन्हा गुणगान॥4॥
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन कराया अपरम्पार।
सौ इन्द्रों ने मिलकर वोला, वासुपूज्य का जय जयकार॥
इन्द्र राज ने बालक का शुभ, वासुपूज्य बतलाया नाम।
भक्तिभाव से चरण कमल में, कीन्हा बारम्बार प्रणाम॥5॥

॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना

जग की माया छोड़ प्रभू जी, करने चले जगत कल्याण।
यह संसार असार जानकर, किया आत्मा का शुभ ध्यान॥
विशद भावना भाते हैं प्रभु, प्राप्त करें चारित्र प्रधान।
हृदय कमल में नाथ! आपका , करते हैं हम भी आह्वान॥

दोहा- ग्रहाराध्य प्रभू भौम के, वासुपूज्य भगवान।
शांति करो संसार में, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ
ठ:ठ:स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जल पूजा को भर लाए, भव ताप नशाने आए।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

शुभ गंधा चढ़ाने लाए, भव ताप नशाने आए।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत यह श्रेष्ठ चढ़ाएँ, अक्षय पद हम भी पाएँ।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षय पद् प्राप्ताय अक्षतं निर्व.स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, हम काम नशाने आए।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामवाण विधवसनाय पुष्पम् निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य सरस सुखराशी, हैं क्षुधा रोग के नाशी।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

दीपक की ज्योति जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।

हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनन्द्राय मोहान्धाकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में धूप खिवाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनन्द्राय अष्टकर्म विधवंसनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम भाई, जो रहे मोक्ष फलदायी।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ा हर्षाएँ, हम पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हे वासुपूज्य! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्व.स्वाहा।

दोहा- आप हमारे देवता, आप रहे भगवान।
शांतीधारा दे यहाँ, करते हम गुणगान॥
॥शांतीमय शांतिधारा॥

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, शिवपद के दातार।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव का द्वार॥
॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

जयमाला

दोहा- मंगल ग्रह आराधय हैं, वासुपूज्य भगवान।
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम गुणगान॥
(वेसरी छन्द)

पूर्वभवों में पुण्य कमाया, जिससे तीर्थकर पद पाया ।
देव शास्त्र गरुवर को ध्याया, मन में सद् श्रद्धान जगाया॥
दर्श विशुद्धी आदिक भाई, सोलह श्रेष्ठ भावना भाई।
स्वर्ग से चयकर गर्भ में आए, देव गर्भ कल्याण मनाए॥
जन्म कल्याणक पे सुर आवें, पाण्डुक शिला पे न्हवन करावें।
तप कल्याणक देव मनाते, धान्य धान्य कह महिमा गाते।

प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, समवशरण धानदेव बनाते॥
दिव्यधवनि प्रभु की शुभकारी, ॐकार मय मंगलकारी।
खिरती जन-जन की कल्याणी, कहलाती है जो जिनवाणी॥
बारह श्रेष्ठ सभाएँ जानो, सुर नर पशु सुनते हैं मानो।
प्रतिहार्य वसु मंगलकारी, समवशरण में हों मनहारी॥
कर्म अघाती प्रभू नशाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।
अष्ट कर्म के होकर नाशी, हुए आप शिवपुर के वासी॥

दोहा- नाथ आपकी वंदना, सुर नर करे मुनीश।
भाव सहित हम आपके, चरण झुकते शीश॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनन्द्राय जयमाला पूणार्घ्य निर्व.स्वाहा।

दोहा- शिवपुर के राही बने, पाए पंच कल्याण।
अर्चा करते आपकी, पाने शिव सोपान॥
॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

प्रथम वलय की अर्घ्यावली

दोहा- सोलह सपने देखती, तीर्थकर की मात।
गर्भ कल्याणक के समय, निश्चय मानो भ्रात॥
॥प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

स्थापना

जग की माया छोड़ प्रभू जी, करने चले जगत कल्याण।
यह संसार असार जानकर, किया आत्मा का शुभ ध्यान॥
विशद भावना भाते हैं प्रभु, प्राप्त करें चारित्र प्रधान।
हृदय कमल में नाथ! आपका , करते हैं हम भी आह्वान॥

दोहा- ग्रहाराध्य प्रभू भौम के, वासुपूज्य भगवान।
शांति करो संसार में, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ:स्थापनम्
अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

गर्भ कल्याणक के अर्घ्य

- जिन माँ को सपना आया, ऐरावत श्रेष्ठ दिखाया।
होगा महान शिशु भाई, इस जग में मंगलदाई॥1॥
- ॐ ह्रीं मातुः ऐरावत हस्ति स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
शुभ श्वेत वृषभ दिखलाया, तव माँ का मन हर्षाया।
शिशु अधिपति होगा भाई, फैलेगी जग प्रभुताई॥2॥
- ॐ ह्रीं मातुः महावृषभ स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
सिंह स्वप्न में देखे माता, जैनागम ये बतलाता।
बल वीर पराक्रम धारी, शिशु होगा महिमा करी॥3॥
- ॐ ह्रीं मातुः सिंह स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
द्वय माल स्वप्न में आए, माँ मन में मोद मनाए।
शिशु तीर्थ प्रवर्तक भाई, होगा जग मंगलदायी॥4॥
- ॐ ह्रीं मातुः मालायुगल स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
लक्ष्मी का न्हवन दिखाए, माँ को सपना ये आए।
शिशु होके वैभव धारी, फिर भी होगा अविकारी॥5॥
- ॐ ह्रीं मातुः लक्ष्मी स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
माँ चाँद पूर्ण सुखदायी, देखे सपने में भाई।
जग जीवों को सुख साता, शिशु होगा सौख्य प्रदाता॥6॥
- ॐ ह्रीं मातुः चन्द्रस्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
शुभ सूर्य स्वप्न में आए, माँ देख-देख हर्षाए।
शिशु तेजवंत हो प्यारा, गुण गाए यह जग सारा॥7॥
- ॐ ह्रीं मातुः सूर्यस्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
माँ कलश युगल शुभकारी, देखे पावन मनहारी।
निधियों का होके स्वामी, बालक होगा शिवगामी॥8॥
- ॐ ह्रीं मातुः कलशयुगल स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

(चौपाई छन्द)

- मीन युगल सपने में आया, जिन माँ का मन तव हर्षाया।
बालक होगा पावन योगी, सुख अनन्त का होगा भोगी॥9॥
- ॐ ह्रीं मातुः मीनयुगल स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

- स्वच्छ सरोवर देखे माता, कहते जिनवाणी के ज्ञाता।
होगा उत्तम लक्षण धारी, बालक जग में मंगलकारी॥10॥
- ॐ ह्रीं मातुः सरोवर स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
शुभ समुद्र सपने में आये, माँ मन में अतिशय हर्षाए।
सर्वदर्शि सुत होगा भाई, फैलेगी जग में प्रभुताई॥11॥
- ॐ ह्रीं मातुः समुद्रस्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
रत्न जड़ित सिंहासन भाई, स्वप्न में देखे जिन की माई।
शिशु होगा साम्रज्य का धारी, शिव पद का होवे अधिकारी॥12॥
- ॐ ह्रीं मातुः सिंहासन स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
देव विमान स्वप्न में आय, माँ ने तव आनन्द मनाया।
स्वर्ग से चय करके सुत आये, देव कई जयकार लगाए॥13॥
- ॐ ह्रीं मातुः देवविमान स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
माँ नागेन्द्र भवन शुभकारी, स्वप्न में देखे मंगलकारी।
बालक होगा अवधि ज्ञानी, होगा जग जन का कल्याणी॥14॥
- ॐ ह्रीं मातुः धारणेंद्रभवन स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
रत्न राशि सपने में आई, माँ ने हर्ष मनाया भाई।
सुत होगा रत्नत्रय धारी, संयम धार होगा अनगारी॥15॥
- ॐ ह्रीं मातुः रत्नराशि स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
धूम रहित अग्नी शुभ जानो, स्वप्न मात ने देखा मानो।
शिशु होगा कर्मों का नाशी, स्वयं बनेगा शिवपुर वासी॥16॥
- ॐ ह्रीं मातुः निर्धूम-अग्नि स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
सोलह स्वप्न मात को आवें, सपने का फल पिता बतावें।
पुण्य सुफल तीर्थकर पाते, जिन पद में हम शीश झुकाते॥17॥
- ॐ ह्रीं मातुः षोडशस्वप्नप्रदर्शकाय गर्भकल्याणकप्राप्त श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व्व स्वाहा।

द्वितीय वलय की अर्घ्यावली

जन्म कल्याणक के रहे, दश अतिशय मनहार।
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, पावन मंगल कार॥
॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

स्थापना

जग की माया छोड़ प्रभू जी, करने चले जगत कल्याण।
यह संसार असार जानकर, किया आत्मा का शुभ ध्यान॥
विशद भावना भाते हैं प्रभु, प्राप्त करें चारित्र प्रधान।
हृदय कमल में नाथ! आपका, करते हैं हम भी आह्वान॥

दोहा- ग्रहाराध्य प्रभू भौम के, वासुपूज्य भगवान।
शांति करो संसार में, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ:स्थापनम्
अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जन्म कल्याणक के अर्घ्य

(नरेन्द्र-छन्द)

‘स्वेद रहित’ तन जानो अनुपम, जन-जन का मन मोहे।
प्रभु के जन्म समय से अतिशय, शुभ तन में यह सोहे॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥1॥

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गर्भ से जन्मे हैं माता के, फिर भी निर्मल गाये।
‘मल मूत्रादिक रहित’ देह प्रभु, अतिशय पावन पाये॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥2॥

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन का ‘रुधिर श्वेत’ है अनुपम, अतिशय पावन गाया।
रुधिर लाल नहि यह शुभ अतिशय, जन्म समय का पाया॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥3॥

ॐ ह्रीं श्वेतरुधिर सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन सुडोल आकार मनोहर, ‘सम चतुष्क’ बतलाया।
जिस अवयव का माप है जितना, उतना ही मन भाया॥

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥4॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

‘वज्र वृषभ नाराच’ संहनन, जिनवर तन में पाते।
गणधारादि नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगाते॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें॥5॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कामदेव का रूप लजावे, जिन प्रभु तन के आगे।
‘अतिशय रूप’ मनोहर प्रभु का, देखत में शुभ लागे॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें॥6॥

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

परम ‘सुगंधित तन’ है प्रभु का, अनुपम महिमाकारी।
अन्य सुरभि नहि है इस जग में, प्रभु तन सम मनहारी॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें॥
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें॥7॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

‘एक हजार आठ शुभ लक्षण’, प्रभु के तन में सोहे।
अद्भुत महिमाशाली जिनवर, त्रिभुवन का मन मोहे॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वे अनुपम सुख पावें॥8॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तुलना रहित ‘अतुल बल’ प्रभु के, अतिशय तन में गाया।
इन्द्र चक्रवर्ती से अद्भुत, शक्ती मय बतलाया॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥9॥

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

‘हित मितप्रिय वचन’ अमृत सम, प्रभु के होते भाई।
त्रिभुवन के प्राणी सुनते हों, मंत्र मुग्धा सुखदायी॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥10॥

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- दश अतिशय पाते प्रभू होते जन्म कल्याण।
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान॥
॥द्वितीया वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

तृतीय वलय की अर्घ्यावली

दोहा- द्वादश तप तपके प्रभू, पाये केवलज्ञान।
ऐसे श्री जिनेश का, करते हम गुणगान॥
॥तृतीया वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

स्थापना

जग की माया छोड़ प्रभू जी, करने चले जगत कल्याण।
यह संसार असार जानकर, किया आत्मा का शुभ ध्यान॥
विशद भावना भाते हैं प्रभु, प्राप्त करें चारित्र प्रधान।
हृदय कमल में नाथ! आपका, करते हैं हम भी आह्वान॥

दोहा- ग्रहाराध्य प्रभू भौम के, वासुपूज्य भगवान।
शांति करो संसार में, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ
ठ:ठ:स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तप कल्याणक के अर्घ्य

जे त्याग करें आहारा, उनसे अनशन तप धारा।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप ऊनोदर के धारी, होते हैं कम आहारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप व्रत परिसंख्यान के धारी, संकल्प करें अनगारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यान तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रस त्याग सुतप के धारी, रस छोड़े हो अविकारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप विविक्त शै"याशनधारी, हो अनाशक्त अनगारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं विविक्त शै"याशन तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप कायोत्सर्ग के धारी, तजते ममत्व गुणधारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप प्रायश्चित्त जो पाते, वह अपने दोष नशाते।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप विनय सुतप के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप वैय्यावृत्ती धारे, वे संयम रतन सम्हारें।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, चिन्तन करते अनगारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥10॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥11॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हैं ध्यान सुतप के धारी, चिन्ता रोधी अविकारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥12॥

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥13॥

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चतुर्थ वलय की अर्घ्यावली

दोहा- ज्ञानावरणी नाशकर, पाए केवलज्ञान।
वासुपूज्य भगवान का, करते हम गुणगान॥
(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जग की माया छोड़ प्रभू जी, करने चले जगत कल्याण।
यह संसार असार जानकर, किया आत्मा का शुभ ध्यान॥
विशद भावना भाते हैं प्रभु, प्राप्त करें चारित्र प्रधान।
हृदय कमल में नाथ! आपका , करते हैं हम भी आह्वान॥

दोहा- ग्रहाराध्य प्रभू भौम के, वासुपूज्य भगवान।
शांति करो संसार में, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

केवलज्ञान के अर्घ्य

दस ज्ञान के अतिशय

होवे सुभक्षिता भाई, सौ योजन में सुखदायी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥1॥

ॐ ह्रीं गव्यूतिशत्तुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो गगन गभन शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥2॥

ॐ ह्रीं अकाशगमन सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु के मुख चार दिखावें, भवि प्राणी दर्शन पावें॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, हम पावन ये अतिशय पाते॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

होते अदया के त्यागी, तीर्थकर जिन बड़भागी॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥4॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सश्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उपसर्ग नहीं हो पावें, जब केवल ज्ञान जगावें॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥5॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ना होते कवलहारी, केवल ज्ञानी अनगारी॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥6॥

ॐ ह्रीं कवलाहार सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु सब विद्याएँ पाए, ईश्वर अतएव कहावे॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥7॥

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नख केश वृद्धि ना पाते, जब केवल ज्ञान जगाते॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥8॥

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अनिमिष दृग पावें स्वामी, प्रभु होते अन्तर्यामी॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥9॥

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ना पड़ती जिन की छाया, है केवल ज्ञान की माया॥
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते॥10॥

ॐ ह्रीं छायाहरित सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देवोंकृत अतिशय

(चौपाई छन्द)

अर्धामागधी भाषा जानो, अतिशय देवोंकृत पहिचानो।

प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते॥11॥

ॐ ह्रीं सर्वार्धामागधी भाषा देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

मैत्री भाव जगे सुखदायी, जग जीवों में मंगलदायी।

प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते॥12॥

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

फल फलते सब ऋतु के भाई, प्रभु अतिशय पाते शिवदायी।

प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते॥13॥

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

(पाईता छन्द)

भू दर्पणवत् हो जावे, जो प्रभु के पद पड़ जावें।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते॥14॥

ॐ ह्रीं अदर्शत प्रतिमा रत्नमयी देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

वायू सुगन्ध सुखदायी, चलती है मंगलकारी।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥15॥

ॐ ह्रीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

जग में आनन्द समावे, आगमन प्रभु का पावें।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥16॥

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारक देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

भूगत कंटक हो जाते, जिनवर के विहार में आते।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥17॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

हो गंधोदक की वृष्टी, हो जाय हर्षमय सृष्टी।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥18॥

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

पद तल में कमल रचाते, होवे विहार सुर आते।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥19॥

ॐ ह्रीं चरणकमलतल रचित स्वर्ण कमल देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

हो गगन सुनिर्मल भाई, है देवों की प्रभुताई।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥20॥

ॐ ह्रीं सर्वदिशा निर्मल देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

सब मेघ धूम खो जावे, दिश निर्मलता को पावे।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥21॥

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

आकाश में जयजय कारे, सुर आके बोलें प्यारे।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥22॥

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

शुभधार्म चक्र मनहारी, ले यक्ष चले शुभगारी।

प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥23॥

ॐ ह्रीं धार्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

वसु मंगलद्रव्य सजावें, प्रभु की महिमा को गावें।
 प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब दिखाते॥24॥
 ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

हम ज्ञानावरण नशाएँ, फिर केवल ज्ञान जगाएँ।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥25॥
 ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 हे दर्शावरण के नाशी, प्रभु केवल दर्श प्रकाशी।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥26॥
 ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 हम मोह कर्म विनसाएँ, फिर सुख अनन्त प्रगटाएँ।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥27॥
 ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 अब कर्मान्तराय नशाएँ, प्रभु बल अनन्त प्रगाटाएँ।
 हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥28॥
 ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

सोरठा

तरु अशोक सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
 प्रातिहार्य कहालाय, समवशरण की सभा में॥29॥
 ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 शुभ सिंहासन होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
 आधार तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे॥30॥
 ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्य सहीताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 पुष्पवृष्टि शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
 महा भद्रिवश सोय, मिलकर करते देव गण॥31॥
 ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

दिव्य ध्वनि सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
 पावें सौख्य अपार, सुन नर पशु सब जगत के॥32॥
 ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 चौंसठ चँवर दुरांय, प्रभु के आगे देवगण।
 भक्ति सहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो॥33॥
 ॐ ह्रीं चामरमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 सप्त सु भव दर्शाय, भामण्डल निज कांति से।
 महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें॥34॥
 ॐ ह्रीं भामण्डलमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 देव दुंदुभि नाद, करें देव मिलकर सुखद।
 करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के॥35॥
 ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
 जड़ित सुनग तिय छत्र, तीन लोक के प्रभू की।
 दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा॥36॥
 ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

पंचम वलय की अर्घ्यावली

दोहा- मुक्ती के राही बने, शिवपुर किया प्रयाण।
 पुष्पांजलि करके यहाँ, करते प्रभु गुणगान॥
 ॥पंचम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

स्थापना

जग की माया छोड़ प्रभू जी, करने चले जगत कल्याण।
 यह संसार असार जानकर, किया आत्मा का शुभ ध्यान॥
 विशद भावना भाते हैं प्रभु, प्राप्त करें चारित्र प्रधान।
 हृदय कमल में नाथ! आपका, करते हैं हम भी आह्वान॥

दोहा- ग्रहाराध्य प्रभू भौम के, वासुपूज्य भगवान।
 शांति करो संसार में, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्थापनम्
 अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

मोक्ष कल्याणक के अर्घ्य

- प्रभु ज्ञानावरणी कर्म नाश, फिर करें ज्ञानकेवल प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥1॥
- ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥2॥
- ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्यावाधा में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥3॥
- ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- प्रभु मोह कर्म से कहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥4॥
- ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- जिन आयु कर्म का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥5॥
- ॐ ह्रीं आयु कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥6॥
- ॐ ह्रीं नामकर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- ना गोत्र कर्म रहा काम, गुण पाएँ अगुरुलघु रहा नाम।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥7॥
- ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- प्रभु अन्तराय करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥8॥
- ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
- दोहा- आठों कर्म विनाश कर, गुण प्रगटाए आठ।
वासुपूज्य के भक्त जन, पाते ऊँचे ठाठ॥
- ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

- दोहा- अष्ट कर्म को नाशकर, शिवपुर पाए वास।
जयमाला गाते विशद, करने ज्ञान प्रकाश॥

(मोतियादाम छन्द)

जगावें जिनवर केवलज्ञान, चराचर वस्तु लेते जान।
कर्म त्रेसठ प्रकृतियाँ नाश, करें निज आतम ज्ञान प्रकाश।
सूक्ष्म किरिया प्रतिपाती ध्यान, जगे तेरहवे गुणस्थान।
करें जिनवर जी योग निरोध, जगावे निज आतम का बोध॥1॥

चौदहवाँ पावें गुणस्थान, व्यूपरत किरिया होवे ध्यान।
बहत्तर कर्म प्रकृतियाँ जान, प्रथम करते हैं प्रभू विनाश।
शेष तेरह प्रकृतियाँ जान, नाशकर देते हैं भगवान।
काल चौदहवें गुणस्थान, का अ इ उ ऋ लृ प्रमाण॥2॥

करें इस भांती कर्म विनाश, होय फिर सिद्ध शिला पर वास।
इन्द्र आकरके अग्नि कुमार, करें नख केशों का संस्कार।
प्रभू प्रगटाए केवल ज्ञान, दर्श क्षायिक पाए भगवान।
जगाए सुख अनन्त भगवान, कहाए जो अनन्त बल वान॥3॥

प्राप्त करके गुण अव्याबाध, अगुरुलघु गुण भी रखना याद।
प्रभू हैं अवगाहन गुणवान, और सूक्ष्मत्व है सुगुण महान।
कहाए नित्य निरंजन सिद्ध, अचल अविनाशी जगत प्रसिद्ध।
प्रभू उत्पाद ध्रुव्य व्यय वान, प्राप्त प्रभु किए मोक्ष कल्याण॥4॥

लिए पर परणति से विश्राम, बनाए निज में ही ध्रुव धाम।
परम पारिणामिक पा के भाव, प्रकट कीन्हे हैं निज स्वभाव।
अतिन्द्रिय बने आप अविकार, हुए प्रभु जग में मंगलकार।
विशद जागी मेरे उर चाह, प्राप्त हो हमको सम्यक् राह॥5॥

- दोहा- गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान शुभ, पाये मोक्ष कल्याण।
वासुपूज्य भगवान का, किया 'विशद' गुणगान॥
- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

- दोहा- शुद्ध बुद्ध चैतन्यमय, गुणानन्त के कोष।
अर्चा करते भाव से, जीवन हो निर्दोष॥

॥इत्याशीर्वादः॥

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
मध्य प्रदेश का देश में, रहा अलग सीन॥1॥
जिला छतरपुर में रहा, कुपी लघु सा ग्राम।
लाल भरोसे सेठ का, रहा श्रेष्ठ शुभ नाम॥2॥
उनके अन्तिम पुत्र थे, नाम था नाथूराम।
जिला छतरपुर में गये, वहाँ बनाया धाम॥3॥
विराग सिन्धु गुरु का वहा आप सुने उपदेश।
दीक्षा ले जिनने धारा, श्रेष्ठ दिगम्बर भेष॥4॥
विमल सिन्धु गुरुवर हुए, इस जग में विख्यात।
विराग सिन्धु जग में हुए, जैन धर्म में ख्यात॥5॥
दीक्षा गुरु कहलाए वह, किया बड़ा उपकार।
भरत सिन्धु जी ने दिया, जिनको पद आचार्य॥6॥
काव्य कला है श्रेष्ठ शुभ, विशद सिन्धु की खास।
लेखन चिंतन मनन में, जो रखते विश्वास॥7॥
हरियाणा शुभ प्रान्त के, गुरुग्राम में आन।
वासुपूज्य का पूर्ण यह, लिखा 'विशद' विधान॥8॥
पच्चिस सौ त्यालीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
भादौ कृष्ण पंचमी, किया पूर्ण गुणगान॥9॥
जिनने अपनी कलम से, लिखे हैं कई विधान।
सारे भारत देश में, होता है गुणगान॥10॥
काव्य कथा नाटक तथा, लिखते हैं कई लेख।
शास्त्र और पत्रिकाओं में, जिनका है उल्लेख॥11॥
सरल शब्द में श्रेष्ठतम, जिसका किया बखान।
ऐसी अनुपम कृति से, करो सभी गुणगान॥12॥
लघु धी से जो भी लिखा, मानो उसे प्रमाण।
पूजा अर्चा कर 'विशद' पाओ पद निर्वाण॥13॥

श्री वासुपूज्य भगवान की आरती

श्री वासुपूज्य भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें, थारी मूरत निहारें, कर दो भव से पार॥
आज थारी.....
वासुपूज्य के सुत हो प्यारे, जयावती के राजदुलारे।
चम्पापुर महाराज-आज थारी.....॥1॥
जन्म के अतिशय तुमने पाए, केवलज्ञान को भी प्रगटाए।
देवों कृत शुभकार-आज थारी.....॥2॥
कर्म घातियाँ तुमने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
शिवपुर के सरताज-आज थारी.....॥3॥
अनन्त चतुष्टय तुमने पाए, प्रातिहार्य भी शुभ प्रकटाए।
तीर्थकर जिनराज-आज थारी.....॥4॥
हम भी द्वार आपके आए, पद में सादर शीश झुकाए।
'विशद' ज्ञान के ताज-आज थारी.....॥5॥

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम शीश॥

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए॥1॥
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए॥2॥
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शशतभिषा गाए, प्रातः काल का समय बिताए॥3॥
फाल्गुन कृष्ण चतुदशी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शशुभ नक्षत्र विशाका गाया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया॥4॥
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिन्ह पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया॥5॥
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।

माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए॥6॥
 अपराहन काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
 बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए॥7॥
 प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
 राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए॥8॥
 आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
 माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए॥9॥
 मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढोक लगाए।
 समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए॥10॥
 गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
 एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी॥11॥
 फाल्गुन कृष्ण पंचमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
 शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराहन काल का समय बताया॥12॥
 मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
 छियासठ प्रभु के गणधार गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए॥13॥
 बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
 शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए॥14॥
 छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
 दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी॥15॥
 चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
 आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आई, एक लाख छह सहस्र बताई॥16॥
 वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख हजार बहत्तर पाई।
 एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए॥17॥
 पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर से मुक्ति पाए।
 ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी॥18॥
 मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
 आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए॥19॥
 सुख-शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
 यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी॥20॥

दोहा- चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
 पाते सुख शांति विशद, बनते शिवपति ईश॥